तृतीय अध्याय

''सुशीला टाकभौरे की कहानियों का चरित्रगत अध्ययन''

सुशीला टाकभौरे की कहानियों का चरित्रगत अध्ययन

आधुनिक काल के दलित साहित्यकारों में सुशीला जी अपनी कहानियों के कारण महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। दलित वर्ग की पीड़ा, दर्द और संत्रास को उन्होंने स्वयं देखा, समझा और जाना है। उसे उन्होंने अपनी कहानियों में स्पष्ट रूप से उतारा है। नारी मन के अंतर्दवंद्व को भी अपनी कहानियों में सम्मिलित किया है। उनकी कहानियों में कहीं भी अतिरंजकता नहीं दिखाई देती है। सभी कहानियाँ वास्तविकता के धरातल पर लिखी गई हैं।

उनकी कहानियों का चरित्रगत अध्ययन करने से पहले यह जान लेना बहुत आवश्यक है कि चरित्र-चित्रण क्या है ? और कहानियों में उसका कितना महत्त्व है ? उसका क्या स्थान है ? आधुनिक काल में कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व अधिक बढ़ गया है। इसी कारण उसका स्वरूप समझ लेना अत्यंत आवश्यक है।

3.1 चरित्र-चित्रण का स्वरूप -

कहानी में चरित्र-चित्रण के महत्त्व को लेकर डॉ. प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं, "कहानीकार अपनी रचना में नियोजित पात्रों के माध्यम से मानवता का बहुपक्षीय रूप प्रस्तुत करता है। वह यह संकेत भी प्रस्तुत करता है कि मनुष्य का चरित्र और व्यक्तिमत्व किस प्रकार से निर्मित और किन परिस्थितियों में प्रभावित और परिवर्तित होता है।"[1] इसी कारण आधुनिक काल में कथानक को उतना महत्त्व नहीं दिया जाता जितना की चरित्र-चित्रण को। चरित्र-चित्रण का संबंध पात्रों से होता है। कहानी में पात्रों की संख्या कम होती है। कहानी में पात्रों के चरित्र का संपूर्ण विकास-क्रम नहीं दिखाया जाता, बल्कि बने-बनाए चरित्र के ऐसे अंश पर प्रकाश डाला जाता है, जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व झलक उठे।

सैद्धांतिक दृष्टि से देखा जाए तो कहानी के प्रमुख तत्त्वों में कथावस्तु के उपरांत चरित्र-चित्रण का ही स्थान है। इसीलिए कहानी में सफल पात्र-योजना के लिए कुछ गुणों की

13821
A

आवश्यकता होती है। कहानीकारों को अपनी रचना में पात्र-योजना और चरित्र-सृष्टि करते समय कल्पना का सहारा भी लेना चाहिए और साथ ही उसका स्वरूप अस्वाभाविक तथा अव्यावहारिक नहीं होना चाहिए। उनमें मानवीयता होनी चाहिए। उनके आचार-व्यवहार, क्रियाकलाप तथा प्रतिक्रियात्मकता में भी स्वाभाविकता अपेक्षित है। अत: हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कहानी में कथात्मक अनुकूलता, व्यावहारिक स्वाभाविकता, चारित्रिक सजीवता, आधारिक यथार्थता, भावनात्मक सहृदयता, रचनात्मक मौलिकता, बौद्धिकता, अंतर्द्वंद्वात्मकता तथा कलापूर्णता आदि प्रमुख गुण होने चाहिए।

3.2 कहानी की पात्र-योजना -

कहानी में पात्रों की संख्या सीमित रहती है। कभी-कभी तो कहानी में एक ही पात्र रहता है, परंतु सामान्यत: तीन-चार पात्र होते हैं। पात्रों की अधिकता होने पर उनके चरित्र का विकास असंभव होता है और कहानी की प्रभावशाली एकनिष्ठता समाप्त होती है। कहानी में प्रासंगिक कथाओं के अभाव में सह-नायक आदि का प्रश्न नहीं उठता। कहानी के पात्रों पर कहानी का अंकुश रहता है। कहानी में चरित्र की झलक होती है, साथ-ही-साथ अभिनयात्मक चित्रण प्रणाली का भी प्रयोग होता है।

3.3 कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व -

कहानी साहित्य में चरित्र-चित्रण के महत्त्व के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त करते समय डॉ. प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं - ''चरित्र-चित्रण कहानी का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इसी तत्त्व के अंतर्गत कहानी के पात्रों की भावात्मक, बौद्धिक, एवं मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं की अभिव्यंजना होती है। सैद्धांतिक रूप में जहाँ पर यह तत्त्व एक कहानी की कलात्मक उत्कृष्टता का द्योतक होता है, वहाँ व्यावहारिक दृष्टि से यह कहानी के उद्देश्य और उदात्तीकृत आदर्श का प्रस्तुतीकरण भी करता है। कहानी में पात्र-योजना के संदर्भ में एक बात सबसे अधिक ध्यान में रखने योग्य है कि उसमें यथासंभव किसी एक पात्र के ही जीवन की किसी घटना-विशेष की

कलात्मक अभिव्यंजना होनी चाहिए।''[2] यहाँ अत्यंत सुंदर ढंग से कहानी के तत्त्वों के अंतर्गत चरित्र-चित्रण के महत्त्व को बताया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कहानी के तत्त्वों के अंतर्गत चरित्र-चित्रण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसी तत्त्व के जरिए आधुनिक काल में जो मनोविज्ञान या मनोविश्लेषण किया जाता है, उसमें काफी हद तक सहयोग प्राप्त होता है।

उपर्युक्त विवेचन के अनुसार सुशीला जी की कहानियों में पाए जानेवाले चरित्रों का अध्ययन करें तो यह दिखाई देता है कि उनके दो कहानी-संग्रहों में कुल 20 कहानियाँ हैं, और उनमें 19 प्रमुख पात्र पाए जाते हैं। कुछ गौण पात्र भी हैं। इन सभी पात्रों का अलग-अलग दृष्टि से अध्ययन करना आवश्यक है।

3.4 विवेच्य कहानियों में पात्र-योजना -

सुशीला जी की कहानियों में पात्रों का चरित्र-चित्रण निम्न प्रकार से है -

नानी -

'मंदिर का लाभ' कहानी का प्रधान पात्र नानी एक रूढ़िवादी स्त्री है, जो अपना बेटा न होने के कारण अपनी बहन के बेटों के पास रहती है। उसकी अपनी एक ही बेटी है, परंतु वह उसके पास नहीं रहती। वह अंधविश्वास के कारण मानती है कि उद्धार तो बेटों से ही होता है। अत: बुढ़ापा बढ़ने के साथ उसका प्रेम अपनी बहन के बेटों से अधिक बढ़ता है।

नानी के पास पूर्वजों की मेहनत की कमाई का बहुत रूपया था। एक मंदिर बनवाने की उसकी इच्छा थी। उसकी देखरेख में एक राधा-कृष्ण का मंदिर बनवाया जाता है। मंदिर का सारा खर्चा नानी करती है। वह बहुत होशियार है। जब मूर्ति की स्थापना के लिए कोई पंडित या पुजारी नहीं आता तो वह अपनी पहचान के एक ब्राह्मण को बुलाकर मूर्ति की स्थापना करवाती है।

नानी हमेशा सोने के टाप्स और सोने की बड़ी-सी लौंग पहनती थी, बाकी सोने की पुतली, हार, अंगूठियाँ आदि छिपाकर रखती थी। पीतल और कांसे के बड़े-बड़े बर्तनों से बड़ी-बड़ी पेटियाँ भरी हुई थी। सोने-चांदी की सभी चीजों को वह एक बर्तन में रखकर घर के भीतर जमीन में

गाड़ देती है। जरूरत के अनुसार जमीन को खोदकर निकालती है। रूपयों की सही गिनती न कर पाने के कारण वह किसी विश्वास के व्यक्ति के पास जाकर गिनवाकर लेती।

मंदिर बनने के बाद सभी लोग उसकी प्रशंसा करते हैं कि - ''छौआ ने मंदिर बनवाकर बहुत बड़ा काम किया है। मंदिर रहने से हम भी धर्म-कर्म करेंगे, जिससे हमारा लोक-परलोक सुधरेगा। मंदिर के साथ सब छौआ बाई को याद रखेंगे। क्योंकि मंदिर तो कई पीढ़ियों के लिए होते हैं।''[3]

कुछ दिन पश्चात् नानी को कैन्सर की बीमारी होती है। खाना-पीना सब बंद हो जाता है, परंतु नानी अपनी बेटी के यहाँ नहीं आती। परलोक सिधारने के पश्चात् सभी धन-संपत्ति, सोना-चांदी सब उसकी बहन के बेटे हड़प लेते हैं। नानी अपना सारा रूपया समाज-सुधार में लगाती तो समाज का बहुत भला होता। नानी के चित्रण द्वारा यह स्पष्ट होता है कि ये लोग मंदिर तो बना लेते हैं मगर अपने समाज की स्थिति को नहीं सुधारते हैं।

सिलिया -

'सिलिया' कहानी की प्रमुख पात्र है सिलिया। सिलिया एक जिद्दी और शिक्षित लड़की है। वह अपने जीवन में प्रगति कर समाज से जातिभेद मिटाना चाहती है। वह मैट्रिक पढ़ रही है। वह बहुत होशियार और समझदार है। सावली-सलौनी, मासूम-भोली, सरल और गंभीर सिलिया स्वस्थ देह के कारण अपनी उम्र से कुछ ज्यादा ही लगती है। वह एक आज्ञाकारी लड़की है।

एक दिन अखबार 'नई दुनिया' में एक विज्ञापन छपता है, 'शूद्रवर्ण की वधू चाहिए।' मध्य प्रदेश के भोपाळ के जाने-माने युवा नेता सेठी जी अछूत कन्या से विवाह करके एक आदर्श रखना चाहते थे। शर्त थी कि लड़की कम-से-कम मैट्रिक हो। सभी ने सिलिया की माँ को सलाह दी कि - ''तुम्हारी सिलिया तो मैट्रिक पढ़ रही है, बहुत होशियार है और समझदार भी है। तुम उसका फोटो, परिचय, नाम पता लिखकर भेज दो तुम्हारी बेटी के तो भाग्य खुल जाएँगे-राज करेगी। सेठी जी बहुत बड़े आदमी हैं - तुम्हारी बेटी की किस्मत अच्छी है.....''[4] सिलिया की माँ किसी का कुछ नहीं सुनती।

वह सिलिया को आगे पढ़-लिखकर कुछ बनने का हौसला रखती है । इससे सिलिया का आत्मविश्वास और बढ़ता है।

एक दलित होने के कारण सिलिया को छूत-अछूत का भेद अच्छा नहीं लगता था। उसे बचपन की बातें याद आती हैं। जब उसकी मामी की बेटी मालती ने कुएँ से पानी पिया था, तब मामी ने उसे कितना मारा था और चिल्लाकर कह रही थी - ''क्यों री तुझे नहीं मालूम, अपन वा कुएँ से पानी भर सके हैं ? क्यों चढ़ी तू कुएँ पर, क्यों रस्सी बाल्टी को हाथ लगाई....''[5] सिलिया ने जब पाँचवीं कक्षा में टूर्नामेंट में भाग लिया था और टूर्नामेंट जल्दी खत्म होने के कारण वह अपनी सहेली के घर जाती है, तो उसकी जाति का नाम सुनते ही उसकी मौसी पानी का ग्लास वापस लेती है।

सिलिया को यह भेदभाव या सेठी जी महाशय का आड़ंबर अच्छा नहीं लगता। सिलिया में बहुत आत्मविश्वास और मन में अनेक नए विचार आते हैं। वह आगे पढ़-लिखकर स्वयं को बहुत ऊँचा साबित करती है। वह अपने समाज की सेवा में स्वयं को समर्पित करती है। इस प्रकार सिलिया पढ़ी-लिखी तथा विद्रोही नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

धर्मपाल -

'व्रत और व्रती' कहानी में एक ही प्रमुख पात्र है - धर्मपाल। धर्मपाल अपने घर-परिवार से दूर दिल्ली जैसे बड़े शहर में नौकरी के लिए दर-दर भटकता अभावग्रस्त युवक है।

धर्मपाल बहुत गरीबी में जीता है। दर-दर भटककर एक अस्थायी नौकरी पाता है, फिर भी वेतन के लिए तरसना पड़ता है। वह ज्यादा कष्ट नहीं करना चाहता। अपने कष्ट के अभाव और परिवार के दु:खों के विषय में सोचते हुए भगवान का कृपाकांक्षी हो जाता है। अपने विचारों को नई दिशा देने के लिए धर्म का सहारा लेता है। वह तन-मन से गणेश-जी की पूजा-आराधना और व्रत करने का दृढ़ निश्चय करता है ताकि भगवान उसके दु:खों को दूर करें। वह कड़ी ठंड़ी में सुबह पाँच बजे से एकाग्रचित्त होकर भगवान का ध्यान करता है, परंतु उसे भगवान के दर्शन भी नहीं होते और बीमार पड़ता है।

दूसरी बार वह भगवान श्रीकृष्ण का जन्माष्टमी का व्रत करता है। दिनभर भूखा रहकर वह उपवास करता है। उपवास का फलाहार और कई बार चाय पीने के बाद भी वह बार-बार कुछ खाने के लिए तड़पता है। भगवान की पूजा करने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं है वह सोच में पड़ता है - "पूजा ? पूजा किस चीज से करेगा ? उसके घर न तो रोली है, न चावल, न नारियल, न हवन सामग्री -हाँ अगरबत्ती तो थी, मगर घर की सफाई करते समय आज ही अगरबत्ती के टुकड़े कचरे में फैंके हैं। अब क्या करें ? क्या भगवान को इन सब चीजों की इतनी जरूरत होती है कि इनके बिना पूजा ही नहीं हो सकती ? अत: मैं तो अपने भगवान की पूजा इन सबके बिना ही करूँगा, क्योंकि इन्हें खरीदने के लिए न तो मेरे पास पैसे हैं और न ही समय है।"[6] अत: वह किसी तरह से पूजा करके खाना खाता है, मगर ज्यादा खाने से सब उबल पड़ता है। उसे खाली पेट सोना पड़ता है।

इस प्रकार धर्मपाल मजदूरी करनेवाले युवकों के अभावपूर्ण जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। वह कष्ट नहीं करना चाहता है लेकिन सूख से रहना चाहता है और इसलिए ईश्वर की पूजा, व्रत करता है। ईश्वर प्राप्ति के लिए धार्मिक आड़ंबरों का सहारा लेता है।

रामचंद -

'नयी राह की खोज' कहानी का रामचंद अनपढ़ और गरीब है। अपने घर का खर्चा ऐसे-वैसे चलाता है। फिर भी अपने बेटे लालचंद को बड़े अरमान से अंग्रेजी कॉन्वेंट स्कूल में भेजता है। पहले-पहले ॲडमीशन की फीस, महिने के फीस, किताब-कापियों का खर्चा, युनिफार्म का खर्चा खुशी-खुशी उठाता है। पहले-पहले लालचंद्र अंग्रेजी की कविताएँ, अंक अच्छी तरह से सीखता है। मगर घर के अनपढ़ वातावरण के कारण उसका आगे विकास नहीं होता है। खर्चा भी बहुत बढ़ता है। कभी कर्ज लेकर, कभी कोई गहना गिरवी रखकर लालचंद को अंग्रेजी की चार क्लास पास करवाई जाती है। लेकिन आगे का खर्चा नहीं उठाया जाता। लालू के माँ-बाप दु:खी होते हैं। माँ कहती है - "और भी तो बच्चे हैं अपने, क्या उन्हें जहर दे दें, आगे की कठिन पढ़ाई है, हिंदी में ही पढ़ लेगा।"[7]

अत: लालचंद को कारपोरेशन की हिंदी प्रायमरी कक्षा में भेजते हैं। उसे हिंदी अच्छी तरह से न आने के कारण उसकी पढ़ाई पूरी नहीं हो पाती। लालू कमाने लायक होता है. मगर उसे नौकरी नहीं मिलती।

रामचंद को उम्र के साथ समाज में जिम्मेदार बुजुर्ग का स्थान प्राप्त होता है। अपने समाज के समझदार और जागृत लोगों के साथ मिलकर वह 'जागरूक' नामक एक सामाजिक संस्था का निर्माण करता है। वह अपने साथ के लोगों से इस विषय में चर्चा करता है कि - ''हमारी संतान हमारी तरह दूसरों की गुलामी करें - ऐसा नहीं होना चाहिए।''[8] रामचंद अपने दलित समाज के लोगों में चेतना और आत्मसम्मान जगाने का प्रयास करता है। उसकी 'जागरूक' संस्था का असर समाज के लोगों पर पड़ता है। परिणामस्वरूप सभी लड़के-लड़कियाँ पढ़ाई में आगे बढ़ने लगे, परंतु उनके सामने नौकरी की समस्या निर्माण होती है। रामचंद फिर से अपने समाज के भविष्य के लिए विचार करता है।

रामचंद के द्वारा यह बताया जा सकता है कि दलित वर्ग आज अपने सामाजिक स्तर से ऊपर उठना चाहता है लेकिन उसे प्राप्त माहौल और अर्थाभाव से कई कठिनाइयाँ आती हैं। फिर भी रामचंद जैसे व्यक्ति समाज में जन-जागरण का काम करते हैं।

लालचंद -

'नयी राह की खोज' कहानी का लालचंद ऐसा पात्र है, जो बुद्धिमान होते हुए भी घर का वातावरण एवं आर्थिक विपन्नता के कारण आगे की पढ़ाई नहीं कर पाता।

लालचंद रामचंद का बेटा है। के. जी. के चार क्लास पास होकर आर्थिक तंगी के कारण रामचंद उसे कारपोरेशन की हिंदी प्रायमरी कक्षा में भेजता है। शुरू से ही अंग्रेजी पढ़ने के कारण उसे हिंदी अच्छी तरह से नहीं आती। अत: वह मैट्रिक भी नहीं पास होता। उसका नाम सफाई मजदूरों की लिस्ट में आता है। उम्र के साथ कमाने लायक होता है, फिर वहीं जिंदगी दोहराई जाने लगी। वह अपने बारे में चिंतित होता है।

लालचंद का बेटा हरिचंद कॉलेज में पढ़ता है। एक बेटी बारहवीं कक्षा में और दूसरी दसवीं कक्षा में पढ़ती है। लालचंद अपने साथियों के साथ मिलकर कुछ ऐसा काम करना चाहता है, जिससे आनेवाली पीढ़ी के माथे से सफाई कर्मचारी होने का कलंक हमेशा के लिए मिट जाए। वह अपने समाज के जागरूक और परिवर्तनवादी विचारधारावाले लोगों के साथ तरह-तरह के आयोजन

करता है, जिससे समाज के युवा वर्ग में जागृति निर्माण हो। वह कुछ कार्यकर्ताओं के साथ एक उद्योगी संस्था शुरू करता है। इस संस्था के अंतर्गत वाल्मीकि समाज के हजारों बेरोजगारों को काम मिलेगा। लालचंद ने अपने समाज के लिए ऐसा काम किया कि कोई नौजवान बेरोजगार नहीं रहेगा और नई पीढ़ी का भविष्य भी सुखद और सुरक्षित रहेगा।

लालचंद अपने पिताजी के काम को आगे बढ़ाता है, उसके पिताजी उसे नहीं पढ़ा सकते, मगर वह अपने बच्चों को पढ़ाता है। साथ ही समाज में बढ़ती हुई समस्या को भी सुलझाने का प्रयास करता है। लालचंद का चरित्र दलितों में हो रहे विकास का चित्रण करता है।

रोमा -

'धूप से भी बड़ा' कहानी की नायिका रोमा एक ऐसी लड़की है, जो सुशिक्षित होते हुए भी जातिभेद को मानती है। इसी जातीयता की भावना के कारण वह सच्चे प्रेम को पहचान नहीं पाती है।

रोमा एक पढ़ी-लिखी, स्वतंत्र विचारवाली लड़की है। वह उच्चवर्ण, संपन्न बड़े अधिकारी की इकलौती बेटी है जो वैभवपूर्ण और उन्मुक्त वातावरण में पली है। वह गोरी-सुंदर, गोल-मटोल, निड़र, हँसमुख, मिलनसार और बातूनी है। सहेलियों के साथ घूमना, पढ़ाई से जी चुराना, समय मिलते ही पीरियड़ छोड़कर कॉलेज से भाग जाना उसके रोज के काम थे। बी. ए. फायनल में पहुँचकर रोमा अपने सहपाठी गौरवर्ण, सुंदर सजीले, खिश्चन बंटी पर अनुरक्त होती है। बंटी भी उससे बहुत प्रेम करता है। घरवालों के विरोध में दोनों कोर्ट मैरिज करते हैं। शादी के दो-तीन वर्ष बाद बंटी रोमा से दूर होता जाता है। वह शराब के नशे में रोमा को गालियाँ देता है, उसे मारपिट करता है। रोमा उसे रास्ते पर लाने की बहुत कोशिश करती है, परंतु बंटी नहीं सुधारता। रोमा को बहुत पश्चाताप होता है।

रोमा सुनील की आँखों में बरसों से उसके प्रति प्रेम का भाव देख रही थी। फिर भी उसने सुनील को कभी महत्त्व नहीं दिया। सुनील रोमा के बगैर किसी और लड़की से शादी नहीं करना चाहता। रोमा उसे इसलिए महत्त्व नहीं देती थी कि सुनील पिछड़े वर्ग का है। बंटी से धोका खाने के

बाद सुनील के बारे में उसके विचार बदल जाते हैं। सुनील रोमा को विवाह-प्रस्ताव भेजता है। दोनों कानूनी विवाह से बँध जाते हैं। विवाह के बाद डॉक्टर सुनील रोमा के साथ प्रेम और सम्मान के साथ रहता है। सुनील के घरवालों का प्रेम देखकर रोमा विभोर हो जाती है। जीन्स-पैन्ट, शर्ट पहननेवाली चुलबुली जिद्दी लड़की एक समझदार गृहिणी बन जाती है। सिर पर साड़ी का पल्लू, हाथों में काँच की चूड़ियाँ, माथे पर दमकती लाल बिंदिया, हर काम के लिए वह तैयार रहती है। रोमा का वहम टूटता है कि छोटी जाति के लोग दिल के छोटे नहीं होते हैं। धूप से भी बड़े होते हैं।

रोमा एक साहसी नारी है जो आरंभ में जातिव्यवस्था को तो मानती है लेकिन पति से धोखा खाने पर वह आंतर्जातीय विवाह करती है।

सुनील -

'धूप से भी बड़ा' कहानी में प्रमुख पुरुष पात्र सुनील है, जो डॉक्टर है, जिसके विचार ऊँचे, श्रेष्ठ और महान हैं। वह पिछड़े वर्ग का है, अपनी जाति और समाज को किसी से कम नहीं समझता। छोटी जाति का होने पर भी उसे अपने आप पर बड़ा अभिमान है।

सुनील रोमा से बहुत प्रेम करता है, परंतु रोमा उसे पसंद नहीं करती, इस बात का उसे पता था। इसीलिए अपनी गलती महसूस कर तटस्थ रहता है। वह गंभीर होकर अपनी पढ़ाई में तल्लीन होता है। जिंदगीभर शादी न करने का फैसला करता है। रोमा को सुनील के घर का वातावरण पिछड़ा लगता था। सुनील के रिश्तेदार अनपढ़ और असभ्य हैं, ऐसा मानकर वह उनके प्रति आदर और बराबरी का भाव कभी नहीं रखती। वह सुनील को परंपरावादी मानती थी। सुनील रोमा से कहता है - ''मैं जिंदगीभर तुम्हारा इंतजार करूँगा। तुम जब चाहो, तब मेरे जीवन में आ सकती हो। तुम्हारी जगह कोई और नहीं ले सकता। वह शुरू से केवल तुम्हारे लिए है।''[9]

बंटी को तलाक देकर रोमा सुनील से शादी करती है। वह सुनील के प्रेम की गहराई देखकर दीवानी हो जाती है। सुनील अपना अधिकतर ध्यान रोमा पर केंद्रित करता है। इस प्रकार सुनील का दिल सचमुच बहुत बड़ा है। सूरज से भी अधिक जीवनदायी और धूप से भी अधिक

प्रकाशवान सुनील के विचार हैं। उसकी बराबरी वर्ण की उच्चता, जाति की श्रेष्ठता नहीं कर सकती। अत: सुनील श्रेष्ठ और महान है।

भाईसाहब -

'मुझे जवाब देना है' कहानी का प्रमुख पात्र भाईसाहब है। वह सवर्ण समाज का होकर भी दलितों के सहायक और प्रेरक है। भाईसाहब लेखिका के पति के मित्र हैं। वह नागपुर के 'महाराष्ट्र हिंदी परिषद' के अधिवेशन में एक विशेष अतिथि के रूप में आते हैं। वहाँ लेखिका से उनकी भेंट होती है। वह उनकी पूछताछ करते-करते उनके मंगलसूत्र की ओर देखते रहते हैं। उनकी ठहरी हुई नजर लेखिका को आत्मग्लानी की दलदल में धकेल देती है। वह सोचती है कि उनकी क्या गलती है ? भाईसाहब को उनसे अपेक्षा थी कि वह अधिवेशन में अपने विचार व्यक्त करें। उनकी नजर उनसे कहती थी कि - ''यह क्या शीला जी, हमें तो आपसे ऐसी उम्मीद न थी। आखिर कब तक अपने लक्ष्य को अपने जीवन के उद्देश्य को तुम भूली रहोगी, उसे नजरअंदाज करती रहोगी ?''[10]

एक दिन सामाजिक मीटिंग के सिलसिले में वे लेखिका के घर आते हैं। घर का मुआयना करते हुए वे कहते हैं - ''भाई सुंदर लाल जी आपका घर अच्छा है, नाश्ते का इंतजाम भी आपने अच्छा किया है। मगर मुझे जो चाहिए वह कुछ मिला नहीं।''[11] उनकी इच्छा थी कि शीलाजी मीटिंग में अपने विचार व्यक्त करें। भाईसाहब की इच्छा थी कि उनको अपने समाज की प्रगति में अपना योगदान देना जरूरी है। उनका काम केवल घर की साज-सज्जा करने तक सीमित नहीं है। अपने समाज से जुड़े रहकर अपने कर्तव्य को पूरा करना है।

इस प्रकार भाईसाहब दलित समाज के शुभचिंतक के रूप में हमारे सामने आते हैं।

रेणु -

'त्रिशूल' कहानी की प्रमुख नारी पात्र रेणु है। इस कहानी में रेणु द्वारा नारी के अंतर्मन की परतें खोलने का प्रयास किया है।

कहानी के आरंभ में ही रेणु एक अजीब-सा सपना देखती है। वह पार्वती है और उसके प्रिय शिव उसके पास आना चाहते हैं। वह उन्हें पास नहीं आने देती। क्योंकि पार्वती के पास

उनकी बेटी मोहिनी है। मोहिनी रेणु की बेटी है। असल में पार्वती रूप में रेणु है, जो प्रतीक रूप में स्वयं को पार्वती के रूप में देख रही है। वह गाँव-शहर से दूर एक पगड़ंडी पर खड़ी मोहिनी को बहला रही थी। अचानक ट्रक में बैठा हुआ एक मनुष्य वहीं से रेणु और मोहिनी की ओर देखते हुए कहता है - ''हां... हां... आओ.... यहाँ शहद भी है और गुलाब-जामुन भी है - ... आओ ....आओ..... ''[12] यह सुनकर पार्वती मोहिनी को लेकर एक अनजाने मिट्टी के बने घर में पहुँचती है। उस मकान के दरवाजे और खिड़की के पट जाली नहीं है। पार्वती वह घर देखने में तल्लीन थी, तब उसने देखा दरवाजे के बाहर दूर से एक त्रिशूलधारी पुरुष चला आ रहा है। वह वही व्यक्ति है, जिसे उसने पहले ट्रक में बैठा देखा था। पार्वती उसे रोकने के लिए न जाने कहाँ से जलती हुई लकड़ी के बड़े-बड़े टुकड़े उठाकर बीच में डाल रही है। वह दोनों के बीच एक व्यवधान उपस्थित कर रही है। साथ ही वह चीखती भी जा रही थी, मगर उसकी आवाज गले के बाहर नहीं निकलती।

रेणु की नींद खुलती है। दिन-भर वह सपना बार-बार उसे भयाक्रांत कर रहा था। तब उसे याद आता है कि वह शिव रेणु का प्रेमी है, विवाह के पहले उसे चाहता था और उससे विवाह करना चाहता था मगर विवाह नहीं हो सका था। यहीं प्रेम उसके अचेतन मस्तिष्क में था, जो स्वप्न के रूप में दिखाई दिया। रेणु अपने प्रेमी के प्रतीक रूप में शिव को अपने पास आते देखती है। मगर अब रेणु शादी-शुदा है, अपने चार बच्चों की माँ है, उसका पति है। वह अब अपने प्रेम को नहीं, अपने कर्तव्यों को महत्त्व देती है।

रेणु द्वारा यह बताया है कि मन की परतों के बीच कितने भाव छिपे होते हैं, कभी-कभी यही रूप बदलकर स्वप्न के रूप में दिखाई देते हैं। यह भी हो सकता है कि रेणु का सुखी संसार, प्यार करनेवाला पति, प्यारे से बच्चे बिछड़ न जाए इसका भी डर उसके दिलों-दिमाग में बैठा हो। रेणु सिर्फ आशंकाओं से ही डरती है।

सौदामिनी -

'सारंग तेरी याद में' कहानी की नायिका सौदामिनी के चरित्र द्वारा लेखिका ने स्त्री का दर्द, अंतर्द्वंद्व तथा सामाजिक बंधनों में बँधी कमजोर नारी का चित्रण किया है। ''सौदामिनी

सामान्य कद, सामान्य डील डौल, सामान्य रूपरंग वाली, आकाशगामी भावनाओं में विचरण करनेवाली, विचारों की ऊँचाई पर रहनेवाली स्वच्छ सफेद पोशाक में शांत श्यामला है।''[13]

सौदामिनी भावुक, जिज्ञासु और संवेदनशील लड़की है। उसका मन युवा सपने देखने लगता है। सौदामिनी की नानी उसे एक राजकुमार और राजकुमारी की कहानी सुनाती है। एक राजकुमार राजकुमारी से बहुत प्रेम करता था, अनजान राजकुमारी इसे स्वीकार नहीं करती। अतः दोनों अलग-अलग घर बसाकर सुखी जीवन बीता रहे हैं। मगर राजकुमारी की सहेली राजकुमार के प्रेम के बारे में बताती है, तो राजकुमारी उसे देखने के लिए तड़पती है। उसके प्रेम की कल्पना में खो जाती है। परंतु अब वह शादी-शुदा है, उसका अपना पति और बच्चे हैं, वह चाहकर भी उसे नहीं पा सकती। वह अपने कर्तव्यों के सामने मजबूर-सी है।

सौदामिनी को नानी की कहानी अधूरी लगती है। वह इस कहानी में पूर्णता चाहती है। वह राजकुमारी को राजकुमार से मिलाना चाहती है, मगर यह असंभव है । दोनों अपने-अपने घर में सुखी और संतुष्ट है। उनका यह सुख केवल सामाजिक दिखावे का था, यथार्थ में वे मन से सुखी नहीं है। सौदामिनी अपनी कल्पना में उन्हें मिलाने का प्रयत्न करती है, परंतु यथार्थ जीवन की उलझनें इतनी अधिक हैं कि यह सब समाज में संभव नहीं होता। तब वह विवश हो जाती है।

सौदामिनी को जो नहीं मिला वह राजकुमारी की कल्पना में देखने लगी कि राजकुमारी का विवाह राजकुमार से हो गया है। राजकुमारी के बेटे हैं, महल है, सुख है। फिर भी वह राजकुमारी की बेटी की कल्पना नहीं करती। क्योंकि समाज में बेटी पर अधिक बंधन होते हैं। सौदामिनी की कल्पना में ही युवा राजकुमारी प्रौढ़ हो जाती है। फिर एक दिन वह राजकुमार से मिलती है, परंतु तब समाज के रीति-रिवाज, मान-प्रतिष्ठा दोनों को अपनी जगह स्थिर रखते हैं, वे दोनों मिलकर भी नहीं मिल पाते।

राजकुमारी का दुःख सौदामिनी का दुख है, सौदामिनी का दुःख किसी भी नारी का दुख हो सकता है। दुःख का कारण प्रेम की अतृप्ति और समाज की रूढ़ियाँ हैं।

इस प्रकार सौदामिनी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि सामाजिक नैतिक मूल्य व्यक्ति को इतना बाँध देते हैं कि व्यक्ति संस्कारों के कारण चाहकर भी अपने मन की

बातें नहीं बता सकता। सौदामिनी उन नारियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपने जीवन में प्रेमी और पति का प्रेम नहीं पा सकती। वह सामाजिकता और चरित्र को महत्त्व देती हैं। ऐसी नारी मन-ही-मन छटपटाती हुई अनेक कल्पनाओं से अपने मन को बहलाती रहती है और अंत तक अतृप्त ही रहती है।

शफिया मौसी -

'दिल की लगी' कहानी की शफिया मौसी को अपनी सुंदरता पर गर्व है। उसमें अहं भी काफी है। वह स्वयं को किसी बंधन में बाँधना नहीं चाहती। मौसी बहुत सुंदर है। प्राचीन काव्य नें कवियों द्वारा प्रयुक्त और वर्णित सौंदर्य के सारे प्रतीक मौसी के नख-शिख वर्णन में सार्थक सिद्ध होते हैं। मगर वह यौवन काल अब नहीं रहा, उसका गोरा रंग कायम है। वह राजस्थानी ढंग का लहंगा, ब्लाऊज और औढ़नी पहनती है।

मौसी और मौसा में कभी बनी नहीं। मौसी की शान-शौकत और नखरों को देखकर मौसा चिढ़ते थे। उनके रौब जतानेवाले स्वभाव को मौसी सहन नहीं करती थी। मौसी ने मौसा से कभी समझौता नहीं किया। अत: वह मौसा से अलग होती है। वह अपने रिश्तेदारों के घर कभी आठ-पंद्रह दिन तो कभी एक-दो मांह तक रहती है। उसका रहना किसी को भी अखरता नहीं था। उसे अनेक कहानियाँ याद हैं, वह बहुत ही रोचक ढंग से सभी को सुनाती हैं। उसको घरेलू इलाज के सभी नुस्खे याद हैं। वह अच्छा खाना, अच्छा पहनना और शान से रहने की आदी है।

हमेशा घूमते रहने के कारण मौसी को दूर-दूर के रहनेवाले रिश्तेदारों की आँखों देखी जानकारी मिल जाती है। मौसा से अलग रहकर घुमक्कड़ जीवन बीताने का कारण पूछने पर वह कहती है, "हूँ, तुम्हारे मौसा ने क्या नहीं किया मेरे साथ। हर बात में टोकना, रोकना, झगड़ना, अपना रूआब बताना कहाँ तक सुनू और कहाँ तक सहन करूँ। मेरे दिल की लगी तुम क्या जानो, इस बुढ़ापे में यहाँ-वहाँ भटककर अपने दिल को बहला लिया करती हूँ। अब तो रिश्तेदारों से मिलते हुए, भगवान का नाम लेते हुए मर जाऊँ यही अच्छा है।"[14]

शफिया मौसी उन नारियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो सुंदरता के सामने प्रेम को महत्त्व नहीं देती। शफिया मौसी दिल को बहलाने के लिए लोगों से मिलती भटकती रहती है, मगर कभी-भी अपने अंतरंग में झाँककर समझौता नहीं करती है।

सेल्मा -

'हमारी सेल्मा' कहानी की प्रमुख पात्र है- सेल्मा, जो हमेशा कुंठाग्रस्त एवं अकेलेपन से घिरी लगती है। वह बचपन से ही बहुत जिद्दी और स्वाभिमानी है। शादी के बाद न जाने पति के कौन-से कटु व्यवहार ने उसके मन में असमझौते की ग्रंथी डाल दी है, जिसके कारण पति-पत्नी में बिल्कुल पटती नहीं है। किसी एक तनाव या किसी व्यवहार के कटु प्रभाव ने उसे इतना कुंठित किया है, जिसके प्रभावस्वरूप वह कुंठाग्रस्त होकर अकेली रह गई है। उसके जीवन में जरूर कोई घटना घटी है।

सेल्मा में अहंभाव भी अधिक था, जिसके कारण वह कभी सामंजस्य का भाव नहीं रखती थी। वह मोहल्ले के किसी भी सदस्य से बातें नहीं करती थी। छोटे-छोटे बच्चों की गलती पर बच्चों के माँ-बाप से झगड़ती है। अपने पति, बेटा और बहू के साथ रहकर भी अकेली, मौन और अंतर्मुखी रहती है। उसके सिर में ट्यूमर होता है, जो काफी बढ़ने से वह बीमार पड़ जाती है। वह घर में ही रहती है।

जीवन के अंतिम क्षणों में सेल्मा अपना अहं, स्वाभिमान, मान-अपमान, जिद्द आदि की परिभाषा बदलने का प्रयास करती है। जहाँ से भी मिलें, वहाँ से कुछ खुशियों की बूँदें बटोर लेना चाहती है, शायद उसने अपने जीवन का पुनर्मूल्यांकन किया हो। सेल्मा समझौता करना सिखती है। वह अपनी जिद्द को स्वयं तोड़ देती है। शायद उसने अपनी इच्छा और जिद्द कहीं अनुचित समझी होगी। इस तरह मुस्कुराती सेल्मा सबको अच्छी लगती है।

इस प्रकार सेल्मा में अहं, निराशा, कुंठा, पलायन और मौन विद्रोह व्याप्त है।

सुमन -

'प्रतीक्षा' कहानी की प्रमुख नारी पात्र सुमन है, जो प्रकाश से एक तरफा प्रेम करती है और जीवन भर उसकी प्रतीक्षा में अविवाहित रहती है। सुमन प्रकाश पर अनुरक्त होती है। उन्होंने किसी समारोह में उसे देखा था। सुमन को लगता है कि प्रकाश भी उससे प्रेम करता है और वह अपना

है। वह मन ही मन में उसकी प्रतीक्षा करने लगती है। वह नवयुवती से प्रौढ़ा हो जाती है, लेकिन प्रतीक्षा का भाव बना ही रहता है। उसे प्रकाश का पता नहीं था।

एक दिन ऑफिस में विनय को देखकर उसे जिंदगी की बीती घड़ियाँ याद आती हैं। विनय सुमन को किसी कार्यक्रम के निमित्त अपने घर बुलाता है। विनय के घर में प्रकाश की तस्वीर देखकर वह अचंभे में पड़ती है। यह वही प्रकाश है, जिसकी प्रतीक्षा में उन्होंने सारा जीवन अविवाहित रहकर व्यतीत किया। प्रकाश की गृहस्थी की हरी बगिया देखकर उसे अपना जीवन विरान रेगिस्तान की तरह लगता है, जिसमें वह अकेली भटकती रही थी।

सुमन एक पढ़ी-लिखी, उच्च शिक्षित होकर भी अपने बारे में योग्य निर्णय नहीं कर पाई थी। उसे अपने इस अविचार पर पश्चाताप होता है। वह अकेली हो जाती है। वह सोचती है कि - ''मैंने विवाह नहीं किया यह मेरी अपनी इच्छा है, कि मैं अपनी मर्जी का जीवन बीताऊँ ! मुझे अब प्रकाश से कुछ लेना-देना नहीं है। मुझे अपने जीवन में किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहिए, किसी का भी नहीं।''[15]

सुमन का आत्मविश्वास जाग उठता है। वह आत्मनिर्भर बनने की कोशिश करती है। उसमें प्रेमभाव के स्थान पर विश्वकल्याण की भावना निर्माण होती है। वह कहती है, प्रेम करना है तो पूरे विश्व से करूँगी। समाज में बहुत दु:ख है, गरीबी है, लाचारी है, अन्याय, अत्याचार है, उनके लिए काम करूँगी।

इस प्रकार सुमन के प्रेमभाव का सामान्यीकरण हो जाता है। वह हमारे सामने एक कमजोर नहीं तो आत्मनिर्भर बनती हुई नारी के रूप में आती है।

आशा -

'घर भी तो जाना है' कहानी की प्रमुख पात्र आशा है। वह एक अध्यापिका है। उसकी छोटी बेटी के. जी. में पढ़ती है। उसे सुबह जल्दी उठकर नाश्ता तैयार करना, खाना बनाना, बेटी को स्कूल के लिए तैयार करना, स्वयं तैयार हो कर जल्दी स्कूल पहुँचना पड़ता था। क्योंकि स्कूल में एक मिनट की भी देरी नहीं चलती। उसे घर का सारा काम संभालकर नौकरी करनी पड़ती है।

आशा अपनी बेटी को स्कूल में छोड़कर नौकरी के लिए अपने स्कूल जाती है। अगर देर हुई तो इंचार्ज की डाँट खानी पड़ती। स्कूल की छुट्टी के बाद जब बस स्टॉप पर आती तो एक घंटा बस नहीं मिलती। बेटी के स्कूल में 14 नवंबर 'बालक दिवस' के कार्यक्रम के कारण छुट्टी नहीं होती। बहुत इंतजार करती है, मगर कार्यक्रम खत्म नहीं होता। वह बहुत क्रोधित होती है, परंतु सभी पालक अपने बच्चों का इंतजार कर रहे थे। कुछ समय बाद कार्यक्रम समाप्त होता है, आशा को चिंता है, अब घर भी तो जाना है।

आशा के चरित्र द्वारा आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में कामकाजी नारी कितना व्यस्त रहती है, उसे कितनी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं, इसका चित्रण किया है।

हरीश त्रिवेदी -

'बंधी हुई राखी' कहानी का प्रमुख पात्र हरीश स्वभाव से बहुत चंचल और शरारती है, मगर स्नेह का प्यासा है। उसे लेखिका के सहयोगी शिक्षक के रूप में एक वर्ष के लिए नियुक्त किया गया है। वह बहुत ही विनोदी स्वभाव का होने के कारण स्कूल में आते ही उसने अपने सहयोगी शिक्षकों के साथ शरारतें करना और रिश्ते-नाते जोड़ना शुरू किया। मगर इन मुँहबोले रिश्तों का किसी ने भी बुरा नहीं माना। उसकी चंचलता, वाचालता और भोलेपन के कारण उसकी किसी भी बात का किसी ने बुरा नहीं माना।

एक वरिष्ठ, प्रौढ़ शिक्षिका को वह 'मौसी' कहने लगा। एक कम उम्रवाली मगर तेज स्वभाववाली विवाहित शिक्षिका को 'भाभी' कहना शुरू किया। इन दोनों ने थोड़ा गुस्सा दिखाने के बाद इस रिश्ते को स्वीकार किया। एक दिन लेखिका को वह 'दीदी' कहता है। लेखिका के मन में भी उसके प्रति भातृप्रेम जागृत होता है। स्कूल में काम की अधिकता के साथ संस्था के अधिकारियों का शासन भी बहुत ही है। अधिकांश शिक्षक और शिक्षिकाएँ अपनी-अपनी चिंताओं और मनोविकारों से ग्रस्त हैं, जिसके फलस्वरूप वे एक-दूसरे के प्रति नीरस और निर्विकार भाव रखते हैं। हरीश ने भी इस नीरस वातावरण की उमस को समझ लिया और व्यस्तता के आवरण में अपने व्यवहार को व्यवस्थित कर लिया।

राखी के त्यौहार के दिन लेखिका ने हरीश को राखी बाँधने अपने घर नहीं बुलाया। न ही हरीश भी उनके घर गया। दूसरे दिन हरीश की कलाई पर राखी देखकर लेखिका बहुत खुश होती है। हरीश की कलाई की राखी खुल जाती है, वह उनको राखी बाँधने को कहता है। लेखिका ने राखी बाँधते ही उसने शरारत और चंचलता से कहा- 'मेरी अच्छी दीदी...।' हरीश की कोई बहन न होने के कारण उसने लेखिका को ही अपनी बहन मान लिया।

आज के आपाधापीपूर्ण जीवन में मनुष्य आत्मकेंद्रित बनता जा रहा है। प्यार, रिश्ते-नाते बनाए रखने के लिए उसके पास समय नहीं है। रिश्तों के प्रति उदासीनता आई है। ऐसे युग में हरीश एक ऐसे चरित्र के रूप में हमारे सामने आता है जो हमेशा नए रिश्ते बनाता है।

कुसुमांजली -

'कैसे कहूँ' कहानी की प्रमुख पात्र है- कुसुमांजली, जो एक साहित्यकार है। उसके माता-पिता ने उसे खूब पढ़ाकर भारतीय मूल्यों पर आधारित परिभाषा के अनुसार चरित्रवान बने रहने का दृढ़ संकल्प किया था। शादी के बाद भी पति के घर सभ्य, सुसंस्कृत, शालीनता से परिपूर्ण वातावरण ने एक अच्छी साहित्यकार बनने की उसे प्रेरणा दी। कुसुमांजली के जीवन में एक अनहोनी घटना घटती है। इससे वह बहुत परेशान होती है। उसे किसी पाठक का प्रेमपत्र आता है। इसी कारण उसके मन में अंतर्द्वंद्व चलता है कि यह बात किससे कहूँ ? अपने पति से यह बात कहने से डरती है। क्योंकि कहीं वे गलत ना समझ लें, या माता-पिता को बुलाकर हंगामा ना खड़ा कर दें।

कुसुमांजली छोटी-सी बातों पर भी बहुत सोचती है। अपने ही मतानुसार कोई भी अनुमान लगाती है और मन-ही-मन आनेवाले परिणामों के बारे में सोचकर बेकार ही डरती है। एक साहित्यकार होते हुए भी अपनी बात किसी को बताने का साहस उसमें नहीं है। अपनी सहेली से भी यह बात कहने से डरती है। वह सोचती है कि सहेली कुछ मनगढ़त जोड़कर अपने अंदाज से समाज के सामने पेश करेगी। वह इस बात से हैरान है कि वह एक शादीशुदा है, उसका अपना घर-संसार है। फिर ऐसा पत्र कौन लिख सकता है ? एक भारतीय नारी होने के नाते वह यह बात बिल्कुल पसंद नहीं

करती कि उसे कोई प्रेमपत्र लिखे। आखिर हिम्मत के साथ वह प्रेमपत्र पति को दिखाती है। पति पत्र पढ़कर जोर-जोर से हँसते हैं। उन पर इस बात का कोई असर नहीं होता।

कुसुमांजली के चरित्र द्वारा महिला साहित्यकारों को कौन-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है यह बताया गया है। साथ ही भारतीय स्त्री अपनी संस्कृति की मर्यादा तथा अपने चरित्र के प्रति कितना सतर्क रहती है यह भी बताया गया है।

सुनीता -

'गलती किसकी है' कहानी की प्रमुख नारी पात्र सुनीता है, जो बहुत ही समझदार है। सुनीता अनीता की छोटी बहन है। इन दोनों बहनों की शादी एक ही घर में सगे भाइयों से होती है। अनीता बड़ी जेठानी होने से सुनीता उसका आदर करती है। सुनीता गंभीर स्वभाववाली है। अनीता जेठानी होने के कारण उस पर रौब जमाती है, परंतु सुनीता चुप रहती है। सुनीता की तीन बेटियाँ हैं। वह अपनी बेटियों की पढ़ाई पर पूरा ध्यान देती है। घर खर्च और बच्चों की पढ़ाई के खर्च के बाद बचे रूपयों से वह घर सजाने की आवश्यक सुख-सुविधाओं की वस्तुएँ खरीदती हैं। अनीता और उसके पति सुनीता की बेटियों को हमेशा कोसते रहते हैं। सुनीता अपनी बेटियों पर अच्छे संस्कार कर उन्हें खूब पढ़ाती है। सुनीता की लायक बेटियों को देखकर अनीता को अपने बेटों पर शर्म आती है। सुनीता कहती है - ''हमारी बेटियाँ हैं तो क्या हुआ ? हमारी बेटियाँ बेटों से कम नहीं हैं। हम उन्हें ही अपने बेटे मानेंगे। वे लोग मूर्ख होते हैं, जो बेटे का मुँह देखने के लिए अनेक बच्चे पैदा करते हैं और बाद में उन्हें सँभाल नहीं पाते। उनका पालन-पोषण ठीक से नहीं कर पाते हैं। हमें न तो बेटों की राह देखना है और न ही अधिक बच्चे पैदा करने हैं। हमारे तीन बच्चे ही अच्छे हैं, बस इन्हीं की देखभाल और शिक्षा-दीक्षा अच्छे से करना है ताकि वे अपने जीवन में सुखी रह सकें।''[16]

सुनीता अपनी बहन के बड़े बेटे की हरकतों से परेशान होती है। वह बहन को समझाती है मगर अनीता पर इन बातों का कोई असर नहीं होता। बहन के जवान बेटे की बिगड़ती जिंदगी को देखकर उसे मन-ही-मन बहुत अफसोस होता है। वह अपनी बेटियों को खूब पढ़ाकर अपने पैरों पर खड़ा कर देती है।

इस प्रकार सुनीता को एक सुसंस्कृत और समझदार नारी के रूप में चित्रित किया गया है और वह यह सिद्ध करके दिखाती है कि बेटा-बेटी यह भेद व्यर्थ है, शिक्षा से बेटी भी आत्मनिर्भर बन सकती है।

अनीता -

'गलती किसकी है' कहानी की दूसरी प्रमुख पात्र है- अनीता। अनीता अहंवादी नारी है। सुनीता की जेठानी होने के कारण वह उसपर अपना रौब जमाती है। अनीता को तीन बेटे होने का बहुत गर्व है। वह किसी भी बात की चिंता नहीं करती। अपने बेटों के प्रति बेफिक्र रहती है। अपने बेटों पर ज्यादा खर्चा करती है, मगर उनपर अच्छे संस्कार नहीं कर पाती। परिणामस्वरूप ज्यादा लाड़-प्यार से बेटे बिगड़ जाते हैं। पढ़ाई में ध्यान नहीं देते, स्कूल में नहीं जाते, घर में किसी काम में हाथ नहीं बटाते। साथ ही माता-पिता को बात-बात पर पर उल्टा जवाब देते हैं। इतना ही नहीं परीक्षा में हमेशा फेल होते हैं।

अनीता को अपने बेटों पर गर्व था, मगर तीनों बेटों ने उसे दुख ही दिया। उसका बड़ा बेटा चार बच्चोंवाली किसी बदमाश औरत के चक्कर में फँस जाता है। सुनीता जब अनीता को समझाती है, तो वह कहती है - "अरे मर्द का बच्चा है, बाहर रहता है, तो रहने दो, लौटकर यहीं मेरे घर वापस आएगा। कोई लड़की थोड़े ही है, जो उसे पेट रह जाएगा। आखिर बेटा है, हमें उसकी फिकर नहीं करना है।"[17] कभी वह गर्व से कहती कि - "अरे जिसका बेटा बाप के बराबर दिखने लगे, उसे किस बात की चिंता ? चिंता करें वे लोग, जिन्होंने लड़कियाँ पैदा की हैं। जवान बेटे होने का सुख तो किस्मतवालों को ही मिलता है।"[18]

अनीता के तीनों बेटे अच्छे नहीं निकलते। उसे बहुत पछतावा होता है। वह अपनी गलती नहीं समझ पाती। वह बहुत ही निराश और दुखी हो जाती है।

इस प्रकार अनीता को एक अहंवादी और घमंड़ी नारी के रूप में चित्रित किया है। इसी वृत्ति के कारण वह अपने बेटों पर अच्छे संस्कार नहीं कर पाती। अंत में उसका घमंड़ टूट जाता है।

इंदू -

'सही निर्णय' कहानी में प्रमुख नारी पात्र है - इंदू, जो एक अध्यापिका और समाजसेविका है। छुट्टी के दिन वह अपने रिश्तेदारों से मिलने जाती है। शादी के बाद जल्दी ही उसे नौकरी मिलती है। नई नौकरी की खुशी में झूमती-गाती इंदू जल्दी ही एक बेटी की माँ बन जाती है। उसके बाद घर के काम बढ़ जाने के कारण वह चिढ़चिढ़ी बन जाती है। इसी बीच दूसरी बेटी भी होती है। इससे घर के काम, जिम्मेदारी तथा परेशानी और भी बढ़ जाती है। घर का पूरा काम करके उसे स्कूल में समय पर पहुँचना पड़ता है। पति का सहयोग बिल्कुल नहीं मिलता था। वह किसी तरह अपनी दोनों बेटियों को खुश रखकर नौकरी करती है।

अब तीसरे बच्चे के आने का संकेत मिलता है। वह आगबबूला हो उठती है। इंदू स्वयं निर्णय लेती है और अस्पताल में पाँच माह का गर्भपात करवाती है, वह लड़का था। उसको बहुत पछतावा होता है कि उसने अपने पति के कुलदीपक को अपने हाथों बुझा दिया। इंदू बेटा न होने का दुख नहीं भूलती और हमेशा दुखी रहती है। लेकिन जब अपने देवर और देवरानी को गोद लिए हुए पुत्र के साथ प्रसन्न और संतुष्ट देखा तो उनसे इंदु को बहुत प्रेरणा मिली। उसकी सहेली कुसुम, जिसने अपनी बहन की बेटी को गोद लिया था, उसका उस बच्ची के प्रति प्रेम देखकर उसका हृदय कचोटने लगता है।

इंदू को बहुत दुख होता है कि वह दो-दो बेटियों की माँ होकर उन्हें दिल से प्यार नहीं कर पाई। आज बेटा-बेटी में कोई फर्क नहीं किया जाता है। बेटियाँ भी खूब पढ़-लिखकर बहुत ऊँचाई तक पहुँच रही हैं, अपने माँ-बाप का नाम रोशन कर रही हैं। यह सोचकर इंदु का मन अपनी बेटियों के लिए ममता और गर्व से भर उठता है। वह सोचती है - "अब वह बेटा न होने का अफसोस कभी नहीं करेगी। वह अपनी बेटियों को खूब पढ़ाएगी - ऊँचे पदों पर पहुँचाएगी।"[19]

इस प्रकार इंदू के चरित्र द्वारा एक संत्रस्त नारी का चित्रण किया है। इंदू अध्यापिका और समाजसेविका होकर भी आरंभ में परिवार नियोजन के बारे में लापरवाह और बेटा-बेटी भेद माननेवाली दिखाई देती है, लेकिन बाद में यह भेद मिटाती है।

गौण पात्र -

सुशीला जी ने अपनी कहानियों में गौण पात्रों को भी स्थान दिया है, जो मुख्य कथानक को सहयोग देने में सफल हुए हैं। उनकी कहानियों में गौण पात्र इस प्रकार हैं -

राजदीप -

'सारंग तेरी याद में' कहानी का राजदीप एक काल्पनिक पात्र के रूप में कहानी को सहयोग देता है। यह काल्पनिक पात्र होने से इसे गौण स्थान दिया है। ''साधारण ऊँचा कद, गठीला बदन, गदरीली आँखें, खिंची हुई भौहे, गोरा रंग, सुनहरे घने बाल, चौड़ा माथा, सीधी खड़ी नाक, चौड़ी ठुडड़ी, भरे हुए गाल हैं।

राजदीप की आँखों में सूरज की धूप के साथ चंद्रमा की चांदनी की शीतलता भी है। उसके माथे पर गुस्से की लकीरें जितनी जल्दी खिंचती हैं, वैसे ही खुशी या हँसी की बात होने पर उसके होठों के कठोर कोर और गाल छिपा नहीं पाते। उसकी नाराजी सबको ज्वालामुखी का एहसास कराती है, मगर वह अपने हृदय में छिपा स्नेह का सागर सबको बता नहीं सकता।

राजदीप जलता हुआ दीपक, प्रज्वलित दीप, जीवंत दीप, जागृत भावनाओं के आवेग से परिपूर्ण दीप, जिसमें शीतल रोशनी है। साथ ही अग्नि का ताप भी है, जिसमें लघुता है, मगर असीम तक पहुँचने की बात भी है। यह अलौकिक होकर भी लौकिक है। लोक परंपराओं से जुड़ा हुआ जीवन और आयु से बँधा हुआ, जो उम्र के साथ होनेवाले परिवर्तनों से मुक्त नहीं है, जो जीवन की सीमा से अधिक दूर नहीं है लेकिन है काल्पनिक पात्र। किसी राजा का राजकुमार या किसी नवाब का शहजादा या किसी धनवान का समझदार सुशील पुत्र कुछ भी हो सकता है - राजदीप।''[20]

बंटी -

'धूप से भी बड़ा' कहानी में गौण पात्र है बंटी। माँ-बाप का अकेला, लाड़ला बेटा है। वह जाति से खिश्चन है। वह रोमा से बहुत प्रेम करता है और शादी भी करता है। शादी के कुछ दिन पश्चात् बंटी शराब पीने लगता है, आवारा घूमता रहता है। कुछ भी काम नहीं करता, बस ! शराब पीना, गालियाँ बकना, रोमा को मारपिट करना और रात-रात भर घर नहीं आता यही उसका जीवन-

क्रम बन जाता है। पत्नी रोमा, रात-रात भर उसका इंतजार करती है, फिर भी वह घर नहीं आता। रोमा बंटी को तलाक देकर सुनील के साथ शादी करती है। बंटी शराब में डूबकर अपनी सुसंस्कृत, सुंदर, पत्नी को खो देता है। परंतु बंटी को इस बात का बिल्कुल पछतावा नहीं होता है।

आंटी -

'धूप से भी बड़ा' कहानी में जो आंटी है वह बंटी की मम्मी की सगी बहन है। वह एक हृदयहीन नारी है। पैंतालीस से अधिक उम्र हो गई, फिर भी उसने शादी नहीं की। वह न कभी अपने पारिवारिक सुख के विषय में सोचती है, न अपने भविष्य की चिंता करती है। बरसों से बहन के पास रहती है, खूब खाती है, अच्छा-अच्छा पहनती है। निश्चित घूमने जाती है और आराम से सो जाती है। उसे किसी भी बात की चिंता नहीं है। ''सहेलियों और मित्रों से हँसने-बोलने में क्या जीवन की सभी खुशियाँ मिल जाती हैं ? दोस्तों के साथ घूमो-फिरो, खाओ-पिओ, मौज करो-बस और कुछ भी नहीं ? क्या जीवन में कभी इससे अधिक की जरूरत नहीं होती कि कोई अपना हो-केवल अपना, जिसका प्रेम केवल अपने लिए हो.... जिसके लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया जाए।''[21]

बंटी की माँ उसे बहुत चाहती है। बंटी की मौसी होने के नाते वह बंटी को बुरी आदतों से बचाने की कोशिश भी नहीं करती। वह रोमा को झूठी तसल्ली देती है। वह रोमा की परवाह नहीं करती। रोमा जब बंटी को तलाक देती है, तो वह रोमा को नहीं रोक पाती। इस प्रकार आंटी एक निर्दयी और कठोर नारी है।

शर्मा जी -

'टूटता वहम' कहानी में जो शर्मा जी है, वे लेखिका के पति के सहयोगी शिक्षक हैं। एक शिक्षक होकर भी वे जातिभेद को मानते हैं। लेखिका को एक प्लाट खरीदना था, परंतु उनके पास इतने पैसे नहीं थे। शर्मा जी भी प्लाट खरीदनेवाले थे। शर्मा जी और लेखिका के पति दोनों ने मिलकर प्लाट खरीदने का निर्णय किया। शर्मा जी नहीं चाहते थे कि वे किसी नीची जाति के व्यक्ति के पड़ोस में रहे। इसी कारण शर्मा जी इस बात को टालते रहते हैं। लेखिका के पति शर्मा जी पर निर्भर रहते हैं और प्लाट कोई दूसरा खरीद लेता है।

लेखिका के पति के मित्र उनको बताते हैं कि - ''शर्मा जी ने पहले ही सोच लिया था कि तुम्हारे साथ प्लाट नहीं खरीदेगा, भले ही जिंदगीभर किराए के मकान में रहेगा। अच्छा मकान मिलें तब भी तुम्हारे पड़ोस में नहीं लेगा।''[22]

इस प्रकार शर्मा जी द्वारा सिद्ध होता है कि ऊपर से लोग जातिभेद को नहीं मानते मगर वे अपने विचार नहीं बदलते। अपने चेहरे पर एक मुखौटा चढ़ाते हैं।

ईश्वरदास -

'दिल की लगी' कहानी का गौण पात्र है- ईश्वरदास, साँवला-सलौना है और स्वभाव, विचार और व्यवहार में बहुत ही अच्छा है। उसके माँ-बाप नहीं हैं। तीन भाई हैं, उनमें यह सबसे छोटा है। ईश्वरदास पेपरमिल में अच्छी जगह पर नौकरी करता है। ईश्वरदास अपने ही मोहल्ले की स्यानी नामक लड़की से प्रेम करता है। स्यानी अनपढ़ और कुरूप है, फिर भी वह उससे बहुत प्रेम करता है। दोनों शादी करते हैं। मगर शादी के कुछ दिन पश्चात् स्यानी जचकी में मर जाती है। इस बात का पता ईश्वरदास को लगते ही वह भी रेल के नीचे अपनी जान देता है।

इस प्रकार ईश्वरदास सच्चा प्रेम करनेवाले युवकों का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन उसके वियोग में वह यादों को संजोने की अपेक्षा अपना जीवन समाप्त कर देता है।

स्यानी -

'दिल की लगी' कहानी का दूसरा गौण पात्र स्यानी है। स्यानी दिखने में अच्छी नहीं है। वह काली-कलूटी और छोटी-सी आँखोंवाली है। वह एक अक्षर भी पढ़ी नहीं है। मगर ईश्वरदास जैसे पढ़े-लिखे, अच्छी नौकरी करनेवाले सुंदर लड़के से सच्चा प्रेम करती है।

स्यानी और ईश्वरदास साथ-साथ घूमने जाते, सिनेमा देखते, बगीचे में सैर करने जाते हैं। स्यानी भी जब चाहे उसके माँ-बाप के घर उससे मिलने जाती। वे दोनों एक-दूसरे को जी जान से चाहते हैं। वे दोनों कभी लड़े नहीं, रूठे नहीं। दोनों शादी करते हैं। शादी के बाद स्यानी को जचकी हो जाती है और वह उसमें मर जाती है।

रीना -

'सही निर्णय' कहानी की रीना इंदू की देवरानी है। रीना की शादी को आठ साल होने के बाद भी वह नि:संतान है। दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं लेकिन दोनों ही एक नन्हें बच्चे को पाने को तरसते रहते हैं।

अत: दोनों अस्पताल से बच्चा गोद लेने का निर्णय करते हैं। मेडिकल अस्पताल से बच्चा गोद लेते हैं। अपनी गोद में नन्हें-मुन्ने बच्चे का अनुभव कर रीना खुशी से झूम उठती है। बरसों बाद रीना के मुख पर स्निग्धता छलकती दिखाई देती है। उसका हृदय खुशी और प्रेम का सागर बन जाता है। रीना उस बच्चे को बहुत प्रेम करती है। उसके लालन-पालन में अपने सारे दुख भूल जाती है।

मदन -

'गलती किसकी है' कहानी की अनीता का बेटा मदन दसवीं कक्षा में पढ़ रहा है। वह हाथ पैर से भरा पूरा जवान दिखता है। वह हँसमुख, मिलनसार स्वभाव के साथ ही कुछ दिलफेंक स्वभाव का है। वह पढ़ाई से अधिक रुचि मोहल्ले की पड़ोस की लड़कियों में लेता है। उसका चाल-चलन अच्छा नहीं है। माँ-बाप के लाड़-प्यार ने उसे बहुत बिगाड़ा है। वह रात-रात भर घर नहीं आता। वह किसी बदमाश औरत के चक्कर में फँस जाता है। माँ-बाप का घर छोड़कर उसके घर में रहने लगता है और उसी के साथ शादी करने का फैसला करता है।

इस प्रकार मदन माँ-बाप के अच्छे संस्कारों के अभाव में बिगड़े बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सुशीला जी एक ऐसी कहानी-लेखिका हैं, जिन्होंने सिर्फ कहानियाँ ही नहीं लिखी, बल्कि उनमें मनोवैज्ञानिक दृष्टि से चित्रण भी किया है। उन्होंने सभी कहानियों में पात्रों की मानसिक स्थिति का अंकन किया है। इसी कारण इन पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ हमारे सामने आ जाती हैं। उन्होंने पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ कभी-कभी स्वयं

बता दी है और कभी अन्य पात्रों के संवादों के जरिए भी चरित्रों की विशेषताओं को प्रस्तुत किया है। कुछ पात्र अपनी विशेषताएँ अन्य किसी माध्यम का सहारा लेकर प्रस्तुत करते हैं। इसी आधार पर सुशीला जी को अच्छी मनोविश्लेषण कर्ता बता सकते हैं। उन्होंने जिन गौण पात्रों का चयन किया है, मुख्य पात्रों के चरित्रों को विश्लेषित करने में सहायता ही नहीं देते बल्कि उनके चरित्र की विशेषताओं को उभारने में भी सहायक रहे हैं।

उनकी कहानियों के नारी-पात्र सीधी-सरल महिलाएँ हैं। घर गृहस्थी से जुड़ी, पति और बच्चों के साथ अपने कर्तव्य निभानेवाली, आर्थिक संकटों का सामना करती हुई नौकरी की भागदौड़ से संत्रस्त नारी चरित्र ही अधिक उभर कर आए हैं। सुशीला जी ने नारी मन का अंतर्द्वंद्व अच्छी तरह से चित्रित किया है। उनकी अधिकतर कहानियाँ लघु होने के कारण उनमें पात्रों की संख्या तो कम है, परंतु लंबी कहानियाँ, जैसे - 'सारंग तेरी याद में' आदि में भी पात्रों की संख्या कम ही दिखाई देती है। पात्रों का अंकन न सिर्फ परिस्थितियों के बल्कि स्वभाव के अनुकूल हुआ है। पात्रों के अनुकूल ही भाषा का प्रयोग किया है। पात्रों के चरित्रांकन में कहीं भी अवास्तवता नहीं है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लेखिका अपनी कहानियों में न सिर्फ पात्रों के यथार्थ चरित्रांकन में सफल हुई हैं, बल्कि पात्रों की मानसिकताओं को खोलने में भी वह समर्थ दिखाई देती हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन, हिंदी कहानी कला, पृ. 289
2. वही, पृ. 330
3. डॉ. सुशीला टाकभौरे, टूटता वहम, पृ. 35-36
4. वही, पृ. 60
5. वही, पृ. 61
6. वही, पृ. 49, 50
7. वही, पृ. 82
8. वही, पृ. 85
9. वही, पृ. 104
10. वही, पृ. 57
11. वही, पृ. 57, 58
12. डॉ. सुशीला टाकभौरे, अनुभूति के घेरे, पृ. 19
13. वही, पृ. 29
14. वही, पृ. 46, 47
15. वही, पृ. 63
16. वही, पृ. 84
17. वही, पृ. 85
18. वही, पृ. 83
19. वही, पृ. 97
20. वही, पृ. 28-29
21. डॉ. सुशीला टाकभौरे, टूटता वहम, पृ. 96
22. वही, पृ. 79